SN – 068

25

III Semester B.A. Examination, November/December 2014
(Fresh) (2014-15 & Onwards)
HINDI LANGUAGE – III
Natak, Sankshipthikaran, Anuvad

Time : 3 Hours

Max. Marks : 100

ST. CLARET COLLEGE LIBRARY

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्य में लिखिए : **(10×1=10)**

1) 'अग्निशिखा' नाटक के लेखक कौन हैं ?
2) आचार्य चाणक्य ने किस ग्रंथ की रचना की है ?
3) अपराजिता किस की पुत्री है ?
4) रोहिणी तथा सोमदत्त चाणक्य से क्यों मिलने आए थे ?
5) किस गाँव का वातावरण कलात्मक है ?
6) ब्रह्म मुहूर्त में सुवासिनी किस से मिलने जा रही थी ?
7) 'राक्षस' नाम राक्षस को किसने दिया ?
8) कौमुदी महोत्सव का आयोजन कब हुआ था ?
9) मलयकेतु के पिता का नाम क्या है ?
10) मगध राज्य की सीमाएँ कहाँ तक फैली है ?

II. किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(3×8=24)**

1) अरे, उनके लिए तो ऊँचे-ऊँचे महल होंगे, बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ होंगी । यह तो, हम जैसे लोगों के रहने योग्य कुटी है ।
2) शान्त... देवि सुवासिनी ! नारी के सम्मान की रक्षा करना प्रत्येक पुरूष का कर्तव्य है । आप तो समस्त कुसुमपुर की शोभा रही हैं... सम्राट नन्द की श्रृंगारशाला की अधिष्ठात्री ! आपकी रक्षा तो होनी ही चाहिए थी ।
3) आर्य चाणक्य ! महामन्त्री चाणक्य ! चन्द्रगुप्त को तुम्हारी आवश्यकता है । महामन्त्री चाणक्य के बिना यह राज्य नष्ट हो जाएगा, चन्द्रगुप्त नष्ट हो जाएगा ! महामन्त्री चाणक्य ! कौमुदी महोत्सव नहीं होगा।
4) ऐसा नहीं होगा, महाभागे ! तुम्हारी कन्या का विवाह होगा, तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हें प्राप्त होगी ।

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **(2×16=32)**

1) 'अग्निशिखा' नाटक के आधार पर समाज और राजनीति परिस्थितियों का चित्रण कीजिए ।
2) नाटक के महापात्र महामात्य चाणक्य का चरित्र चित्रण कीजिए ।
3) सुवासिनी तथा राक्षस का पात्र परिचय दीजिए ।

P.T.O.

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : **(2×7=14)**

1) राजनर्तकी और चन्द्रगुप्त का संवाद.

2) गुप्तचरों का संगठन.

3) राक्षस.

V. उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में सार लिखिए : **(1×10=10)**

बापूजी की प्रेरणा से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान मिला है । उन्होंने ही दक्षिण में अपने विश्वास पात्र कार्यकर्ताओं को हिन्दी प्रचार करने के लिए भेजा । उनका विश्वास था कि संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी अत्यंत आवश्यक है । उनका स्पष्ट मत यह था कि बहुत दिनों तक किसी विदेशी भाषा को प्रशासनिक.

VI. **हिन्दी** में अनुवाद कीजिए : **(1×10=10)**

ಪಂಡಿತ ಈಶ್ವರಚಂದ್ರ ವಿದ್ಯಾಸಾಗರರು ಪರೋಪಕಾರವನ್ನೇ ಜೀವನದ ವ್ರತವನ್ನಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಬಾಳಿದರು. ಅವರ ಮನೆಗೆ ಹೋದ ಯಾವ ದರಿದ್ರನೂ ಬರಿಗೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಂತಿರುಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಒಂದು ದಿನ ಅವರ ತಾಯಿ ಮಗನನ್ನು ಕುರಿತು – "ಈಶ್ವರ ಚಂದ್ರ, ನೀನು ಬಂದವರಿಗೆಲ್ಲ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದುದನ್ನು ಕೊಡುತ್ತ ಬಂದೆ. ಈಗ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಹಣವಿಲ್ಲ" ಎಂದರು. ಮಗನ ದೃಷ್ಟಿ ತಾಯಿಯ ಕೈಯಲ್ಲಿದ್ದ ಚಿನ್ನದ ಬಳೆಗಳ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿತು. "ಅಮ್ಮ, ನಿನ್ನ ಬಳೆಗಳನ್ನು ಕೊಡು, ಮಾರಿ ಬಂದ ಹಣದಲ್ಲಿ ಬಡವರ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುತ್ತೇನೆ. ಇನ್ನು ಕೆಲವು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಹಣವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಅಮೂಲ್ಯವಾದ ಆಭರಣಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸಿಕೊಡುತ್ತೇನೆ" ಎಂದರು. ತಾಯಿ ಮಗನ ಮಾತಿನಂತೆ ಮತ್ತೆ ಬಳೆಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಟ್ಟರು.

Pandit Eshwarchand Vidyasagar had taken the service of the poor as a penance in his life and dedicated him self for this cause. No beggar that approached him would retrun empty handed from his door. One day his mother called him and said " Eshawrchand, you have given away everything of this house as alms. Now there is no money left at home". His eyes fell on his mother's gold bangles. He said "Mother, please give your bangles I will sell them and use the money to solve the problems of the poor people. After some years, I will collect some money and get you some valuable ornaments". Likewise his mother gave away her bangles to her son.